A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

आकाशवाणी जालन्धर में गुरुवाणी संगीत: एक संक्षिप्त अध्ययन

Sandeep Kaur[1], Dr. Lata[2]

1 Research Scholar, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Jalandhar

2 Supervisor, Department of Theatre and Music, Lovely Professional University, Phagwara, Jalandhar

OPEN ACCESS

सार

मानव-सभ्यता के विकास में कई आविष्कारों की भूमिका रही है, जिन्होंने मानव को सफलता के नए नए मार्ग दिखाए। विचारों को जब आदान-प्रदान हेतु भाषा का माध्यम प्राप्त हुआ तो उसने इंसान को एक सभ्य पहचान प्रदान की, जो समय के साथ-साथ संगीत और जनसंचार के माध्यम के रूप में विकसित हुई। संचार से अभिप्राय, जहाँ कोई सूचना या विचार एक व्यक्ति से दूसरे को प्रेषित करना और वापिस प्राप्त करना होता है, वहीं जनसंचार एक व्यक्ति या एक समूह द्वारा बहुत व्यापक वर्ग तक सूचना पहुंचाता है। इसके अन्तर्गत आकाशवाणी की उदाहरण सबसे सशक्त और प्रसिद्ध कही जा सकती है। इसके आरंभ ने तकनीकी रूप से सफलता का ऐसा परचम लहराया, जिसने उपरांत तकनीक के आयाम में और भी कई आविष्कार हुए, जिन्होंने दुनिया को बदल कर रख दिया। भारत में इस साधन ने अपने पैर पसारे और देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में आकाशवाणी के केन्द्र स्थापित किए गए। आकाशवाणी के जालन्धर केन्द्र की शुरुआत ने जन-संचार के माध्यम रुपी बनी प्रमुख उद्देश्य को पूरा करने के साथ-साथ गुरुवाणी संगीत को श्रोताओं तक पहुँचाने का उत्कृष्ट प्रयास भी किया। इस परम्परा को कार्यक्रम के रूप में जालन्धर आकाशवाणी ने आज भी कायम रखा है, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

मुख्य शब्द: *आकाशवाणी, पृष्ठभूमि, जालन्धर केन्द्र, गुरुवाणी, संगीत, कार्यक्रम, प्रसिद्ध कीर्तनकार, निष्कर्ष।*

शोध प्रवृधि

इस शोध पत्र में गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से आकाशवाणी जालंधर में गुरबानी संगीत के प्रसारण से संबंधित प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से जानकारी संकलित की गई। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत आकाशवाणी जालंधर के कर्मचारियों, गुरबानी गायकों और तकनीकी विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार किए गए तथा स्टेशन की कार्यप्रणाली का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। इसके अतिरिक्त, आकाशवाणी द्वारा प्रसारित गुरबानी संगीत की रिकॉर्डिंग का विश्लेषण किया गया। द्वितीयक स्रोतों में गुरबानी संगीत, सिख धर्म और आकाशवाणी के इतिहास से संबंधित पुस्तकों, शोधपत्रों, सरकारी दस्तावेजों एवं डिजिटल माध्यमों से प्राप्त जानकारी का अध्ययन किया गया।

'आकाशवाणी' शब्द का प्रयोग जनसंचार के माध्यम रेडियो के लिए किया जाता है। इसके शाब्दिक अर्थ का अध्ययन करें तो प्रामाणिक हिन्दी कोश के अनुसार इससे तात्पर्य है- "1. वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोले। देव वाणी। 2. रेडियो"1 मानक हिन्दी कोश में इस शब्द को प्राचीनता और नवीन सन्दर्भों में स्पष्ट किया गया है- "1. वह कथन या बात जो किसी देवता या ईश्वर की ओर से कही हुई या आकाश से सुनाई पड़ने वाली मानी जाती है। 2. रेडियो-यंत्र की सहायता से विद्युत तरंगों के द्वारा दूर-दूर तक प्रसारित की जाने वाले ध्वनियां (संगीत, समाचार, वार्ताएं आदि) 3. वह भवन या स्थान जहां से विद्युत तरंगों द्वारा संगीत, समाचार, वार्ताएं आदि प्रसारित की जाती है। प्रसारण गृह (ब्राड-कास्टिंग हाऊस) जैसे आकाशवाणी पटना या लखनऊ।"2 आकाशवाणी के लिए अंग्रेजी भाषा में Oracle शब्द का प्रयोग होता है। अंग्रेजी भाषा का कोश इसके अर्थ को व्याख्यायित करने के साथ-साथ इसे ग्रीस के इतिहास के साथ भी जोड़ते है। ब्रिटैनिका डिक्शनरी के अनुसार Oracle का अर्थ है- "1. in ancient Greece (a) a person (such as a priestess) through whom a god was believed to speak. (b) the place (such as a shrine) where people went to ask questions of an oracle (c) an answer or message given by an oracle. 2. a person who has a lot of knowledge about something and whose opinions and advice are highly valued."3

वस्तुतः प्रस्तुत शब्द-आकाशवाणी, रेडियो के लिए प्रयुक्त होने से पूर्व भारत के प्राचीन ग्रन्थों जैसे श्री विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण, कल्कि पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराणम्, ब्रह्माण्ड माहपुराणम्, स्कन्दपुराण, रामचरितमानस, अभिज्ञानशकुन्तलम् आदि में वर्णित हुआ है और जिसके अन्तर्गत किसी देववाणी के द्वारा भविष्य में होने वाली किसी विशेष घटना की जानकारी दी जाती है या उसके बारे में सूचित किया जाता है। कल्कि पुराण मे तृतीयांश के चौदहवें अध्याय मे आकाशवाणी के बारे में लिखा गया है, जहां कल्कि जी सेना और अन्य राजाओं के साथ कांचीपुरी नगरी में जाते हैं, जो कि सांपों से घिरी हुई है। वह सांपों को मार कर इस पुरी में प्रवेश करते हैं, जहां कोई भी मनुष्य नहीं बल्कि नाग-कन्याएं ही है। कल्कि अपने

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

साथ आए राजाओं से पूछते हैं कि क्या हमे इस नगरी में आगे जाना चाहिए या नहीं, उसी समय वहां आकाशवाणी होती है कि इस पुरी में सम्पूर्ण सेना के साथ जाना सही नहीं, क्योंकि ऐसा करने पर कल्कि जी के अतिरिक्त, विष-कन्याओं की दृष्टि सभी पर पड़ने से, वे काल में ग्रस्त हो जाएंगे, जिसे सुन कर कल्कि अकेले ही अपनी खड़ग धारण कर पंछी के साथ अन्दर गए-

"इतिकर्त्तवयताव्यग्र रमानाथं हरिप्रभुम।

भूपांस्तदनुरूपाश्रव खे वागाहाशरीरिणी।।७।।

विलोक्य नेमां सेनाभिः प्रवेष्टु भोस्त्वमर्हसि।

त्वं विनान्ये मरिवष्यन्ति विषकन्यादृशादपि।।

आकाशवाणीमाकर्व्य कत्किः शुक सहायकृत्।

ययावेकः खड़गधरस्तुरगेण त्वरान्वितः।।६।।

आकाशवाणी शब्द का रेडियो के लिए मैसूर यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ. एम. वी. गोपालस्वामी ने प्रयुक्त किया। इस शब्द के प्रयोग में रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम भी आता है। इण्डियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस को जब 'ऑल इंडिया रेडियो' के नाम में परिवर्तित किया गया तब उद्घाटन के अवसर पर टैगोर जी ने एक कविता के द्वारा इसको आकाशवाणी कह कर सम्बोधित किया। इस नाम को 1965 में पण्डित नरेन्द्र शर्मा के सुझाव पर पूर्ण रुप में स्वीकार्य किया गया। भारत में रेडियो का प्रसारण स्वतन्त्रता से पूर्व 1922 में हुआ, हालांकि इसके विधिवत् प्रसारण से पहले कलकत्ता, बम्बई, मद्रास से गैर सरकारी आयोजनों ने प्रसारण शुरू करने का प्रयास तो किया परन्तु यह अधिक समय तक चल नहीं सका। 1927 में सरकार के साथ हुए समझौते के पश्चात् बम्बई और कलकत्ते से रेडियो प्रसारण की नियमबद्ध शुरुआत हुई और इसे 'ऑल इंडिया रेडियो' का नाम दिया गया। समय के साथ-साथ इसके कई केन्द्रों स्थापना भी हुई। देश की स्वतन्त्रा को पूर्व के केन्द्रों में दिल्ली, बम्बई, लखनऊ, कलकत्ता, मद्रास, तिरुचिरापल्ली, लाहौर, पेशावर, ढाका ने नाम आते हैं, जिनमें पहले छः केन्द्र आजादी के बाद भारत में रहे और बाकी के तीन पाकिस्तान के हिस्से आए।

आकाशवाणी का जालन्धर केन्द्र अपने अस्तित्व में 1947 में विभाजन के बाद में ही आया परन्तु इसके पीछे कई लोगों की दूरदेशी सोच थी, जिन्होंने हवा के बदलते रूख को समझते हुए व्यापक स्तर पर जालन्धर केन्द्र की स्थापना हेतु प्रयास किए। इन शखिसयतों में सरदार करतार सिंह दुग्गल और सरदार स्वर्ण सिंह का नाम प्रमुख रूप से आता है, जिन्होंने एक पत्र के द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल को कई तथ्यों को प्रस्तुत करते हुए, जिसमें लाहौर का केन्द्र पाकिस्तान के हिस्से में आने, पंजाब का क्षेत्र सीमावर्ती होने, पंजाबी (पूर्वी) भाषा को भविष्य में आगे लाने जाने, पंजाब की जरूरतों को दिल्ली केन्द्र द्वारा किसी समय न पूरा कर पाने की परिस्थिति में, आदि मुख्य थे, जालन्धर का अपना केन्द्र होने की मांग उठाई। इसके अतिरिक्त रेडियो केन्द्र का होना, उन शरणार्थियों के बिछुड़े परिवारों, सम्बन्धियों आदि का पता देने या जानकारी देने के लिए बहुत जरूरी था, जो विभाजन की त्रासदी का शिकार बने थे और भारत में आने अनेक पुनः निवास की कोशिशें की जा रही थी। इस मांग को सरदार वल्लभ पटेल ने स्वीकार करते हुए जालन्धर और अमृतसर में ट्रांसमीटर लगाने का निर्णय लिया। देश स्वतन्त्र भारत में 1 नवम्बर 1947 को जालन्धर आकाशवाणी के रूप में पहला केन्द्र स्थापित हुआ, जिसका पहला प्रसारण 1948 में लिया गया। सरदार करतार सिंह दुग्गल जालन्धर और अमृतसर दोनों केन्द्रों के पहले केन्द्र निदेशक बने। हालांकि ट्रांसमीटिंग टावरों और इमारतों के निर्माण में कई महीने लग गए।

"According to Duggal, initially some bamboo poles were joined together and bolted and riveted together to improve a crude transmitting tower with transmitting elements installed towards the top. But this stop gap arrangement was unlikely to deliver the desired result … Between June and September of 1948, both transmitters started functioning. Most of the refugees entering India had still not settled. The first task before these radio stations was to announce the names, villages, tehsils and district of the missing individuals and repeat messages again and again."5

जालन्धर और अमृतसर को मिले एक-एक किलोवाट के ट्रांसमीटरो की रेंज आरम्भ में 15 मील तक की थी, जबकि पाकिस्तानी रेडियों की रेज से 60 मील से अधिक थी। इसलिए इसका प्रसारण समय भी शुरूआत में बहुत कम था, जोकि दोपहर में होता था और फिर शाम को छः से साढ़े सात

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तक का था परन्तु 1952 में भारत की पार्लियमैंट चुनाव के बाद डा. बी. वी. केसकर केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री बने और उन्होंने भारत में कम पावर वाले ट्रांसमीटरों को उच्च-शक्ति वाले और लंबी रेंज के ट्रांसमीटरों में बदलने की योजना तैयार की, जिसमें अन्तर्गत जालन्धर केन्द्र को 50 किलोवाट का ट्रांसमीटर मिला और इसके साथ ही पूरे दिन के प्रसारण का समय भी प्राप्त हुआ। जालन्धर केन्द्र को सफलता की ऊँचाइयों तक लेकर जाने में सरदार जोध सिंह और सोहन सिंह मीशा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है।

वर्तमान समय में आकाशवाणी जालन्धर के 'ए' और 'बी' दो चैनल हैं। चैनल 'ए' 50 किलोवाट की मीडियम वेव की योग्यता वाला है और चैनल 'बी' का ट्रांसमीटर 100 किलो वाट मध्यम तरंगों की योग्यता वाला है। जालन्धर केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले चैनलों में ऑल इण्डिया रेडियो जालन्धर (AIR Jalandhar/Akashwani Jalandhar) की फ्रीक्वैंसी 702 किलो हर्ट्ज, 873 किलो हर्ट्ज और 102.7 मैगा-हर्ट्ज है। रेडियो मंत्रा 91.9 एफ. एम. की 91.9 मैगा हर्ट्ज, विग एफ. एम. की 92.7 मैगा हर्ट्ज, माई एफ. एम. एफ. एम. बैंड (भास्कर ग्रुप) की 94.3 मैगा हर्ट्ज, रेडियो मिर्ची की 98.3 मैगा हर्ट्ज और ज्ञानवाणी की 105.6 मैगा हर्ट्ज है।

जालन्धर आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में कार्यक्रमों की लम्बी फेरहिस्त में गुरबाणी संगीत के कार्यक्रम की शुरुआत इस केन्द्र का प्रशंसनीय कार्य कहा जा सकता है। वास्तव में संगीत मानव को लौकिकता या भौतिक स्तर से आध्यात्मिक स्तर पर पहुँचाने का सामर्थ्य रखता है। "संगीतम जीवन के ताने बाने का वह धागा है, जिस के बिना जीवन सत् और चित् का अंश होकर भी आनंद रहित रहता है और नीरस प्रतीत होता है। यह न तो साधारण शिक्षा या व्यसन-पूर्ति की वस्तु है और न ही कठिन मेहनत के परिहार्थ साधारण सा मनोरंजन मात्र। संगीत ईश्वर की वाणी है, इसलिए यह ब्रह्म स्वरूप है।"6

भारतीय संगीत वैदिक युग से ही प्रभु भक्ति या आराधना का प्रमुख साधन माना गया है। गुरुबाणी के सन्दर्भ में संगीत ईश्वर के गुणों की सराहना करते हुए उस अद्वितीय ज्योति को महसूस करने का सफल साधन बनता है, जो मनुष्य को सम्पूर्ण विकारों से रहित करते, निर्मल एवं शुद्ध बना देता है और उसके अन्दर सहजावस्था, आनंद, प्रसन्नता, ईश्वर-अनुराग के भाव का प्रवाह संचालित हो जाता है। गुरुबाणी के अन्तर्निहित गुरुओं के उपदेश, अमूल्य विचार, भक्तों, भट्ट-साहिबानों की ईश्वर सम्बन्धी विचारधाराएं, प्रेम, शांति के माध्यम से मनुष्य को उसके जीवन के वास्तविक उद्देश्य से अवगत कराते हैं। इस प्रकार गुरबानी में कीर्तन की महिमा सुनने और देखने को मिलती है। प्रो. कुलदीप सिंह उगाणी के शब्दों में "गुरु साहिबान ने गुरुबाणी में फुरमान किया है कि पाठों, वेद-विचारों, धर्मों, जप-तप से थका जीव कीर्तन सुन कर शांति और आनंद प्राप्त करता है-... आन्तिरक ईश्वरीय अंश सर्वव्यापी ईश्वर के साथ एकसुर होना चाहता है और यह एकसुरता कीर्तन के साथ आसानी से प्राप्त होती है। कीर्तन मुर्दा-मन को स्पर्श करता है, टटोलता है, पुर्नजीवित करता है और झंकृत कर देता है। यह स्पर्श उसके मन में अन्य मनुष्य के लिए, ईश्वर की सम्पूर्ण रचना के लिए प्रेम जागृत करती है और सर्व एकता का एहसास पैदा करती है।"7

प्रभु स्मरण से साथ मानवीय समानता और एकात की सकारात्मक विचारधारा को प्रसारित करने के उद्यम के फलस्वरूप जालन्धर आकाशवाणी से कीर्तन परम्परा के कार्यक्रम की शुरूआत की गई, जिसमें भाई समुन्द सिंह का नाम सबसे पहले आता है। वर्तमान में आकाशवाणी जालन्धर द्वारा दरबार साहिब से गुरुबाणी का सीधा प्रसारण और इसके अतिरिक्त गुरुबाणी विचार प्रोग्राम द्वारा श्रेतागणों को इसका श्रवण कराया जाता है। आत्मिक संगीत की इस केन्द्र से आध्यात्मिक प्रस्तुति ने कई कीर्तनकारों का नाम आदरणीय हैं- जैसे - भाई इकबाल सिंह, भाई बख्शीश सिंह, भाई अमरीक सिंह जख्मी, भाई अवतार सिंह, भाई वरिन्दर सिंह, भाई गोपाल सिंह, भाई रविन्द्र सिंह, भाई सुर्जन सिंह, भाई अर्जुन सिंह, भाई वरिन्दर सिंह, भाई सुखविन्दर सिंह, भाई अवतार सिंह, भाई हरचंद सिंह, भाई गुरतेज सिंह, भाई निंरजन सिंह, भाई प्यारा सिंह, भाई मनजीत सिंह, भाई जोगिन्दर सिंह, भाई जागीर सिंह, भाई आंकार सिंह, भाई अनूप सिंह, भाई कुलदीप सिंह, भाई बलजीत कौर, भाई बलविन्दर सिंह, भाई दर्शन सिंह, भाई राजबरिन्दर सिंह, भाई कंवलजीत सिंह, बीबी चरणजीत कौर, भाई हरबंस सिंह, भाई अजीत सिंह, भाई गुरदयाल सिंह, भाई साधु सिंह, भाई दविन्दर सिंह, भाई सुख्पाल सिंह, भाई गुरबचन सिंह, भाई अमनदीप सिंह, भाई निरंजन सिंह, भाई सरबजीत सिंह, भाई बलदेव सिंह, भाई गुरचरन सिंह रसीया, भाई इन्द्रजीत सिंह, भाई भगवन्त सिंह, भाई बहादुर सिंह, भाई प्रभजोत सिंह बाली, भाई त्रिलोचन सिंह, भाई अर्शप्रीत सिंह, भाई दिलबाग सिंह, कुमार गौरव, भाई गुलबाग सिंह, भाई बलकार सिंह, भाई बलबीर सिंह, भाई हरी सिंह आदि। इनके अतिरिक्त भाई गुरमीत सिंह शांत, भाई अलंकार सिंह, डा. गुरनाम सिंह, भाई आशप्रीत कौर, भाई शमिन्दर पाल सिंह आदि कलाकार आज भी इस रीति में अपना अवदान दे रहे हैं।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निष्कर्ष

जालंधर आकाशवाणी की बुनियाद ने भारत को आज़ादी का न केवल प्रथम केन्द्र दिया बल्कि सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के साथ-साथ समाज में आध्यात्मिक लहर को प्रचारित और प्रसारित करने में सशक्त भूमिका भी निभाई। अध्यात्म अपने मूल उद्देश्य में तब ही सफल सिद्ध होता है, जब उसके द्वारा समानता और एकता के गुणों को पहचाना जाए और स्वीकार किया जाए। इस सन्दर्भ में गुरुबाणी संगीत एक प्रामाणिक उदाहरण है, जो कि सांझेदारी तथा मानवता का संदेश देती है। आकाशवाणी का यह केन्द्र विशेष गुरुबाणी संगीत की इस निर्मल धारा के प्रवाह द्वारा तकनीकी युग में आत्मज्ञान और नैतिक मूल्यों का ज्ञान और उन्हें आत्मसात करने में प्रेरक रूप साधु भूमिका का निर्वाह करता है।

सन्दर्भ

1. प्रामाणिक हिन्दी कोश (संवत् 2007 विक्रमी), संवादकः रामचन्द्र वर्मा, बनारस: हिन्दी साहित्य कुटीर, पृ. 95.
2. मानक हिन्दी कोश (1966), संपादक: रामचन्द्र वर्मा, प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पृ. 245.
3. https://www.britannica.com
4. वेदव्यास, महर्षि (संवत् 1963), कल्कि पुराण, काशी: निगमागम पुस्तक भण्डार, पृ. 206.
5 apnaorg.com
6. मिश्र, लालमणि (2022), भारतीय संगीत वाद्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन ग्रुप, पृ. 17.
7. गुरुमति संगीत ते भगती कीर्तन परम्परा (2011), संपादक: भाग सिंह अणखी, दिलजीत सिंह बेदी, अमृतसर: धरम प्रचार कमेटी, पृ. 136.